



RAN - 2301000103033011

RAN-2301000103033011**S.Y.B.A. (Sem. III) Examination October - 2023****Sanskrit - Paper 5-A (Core Course) (Principal)****ललित साहित्य – संस्कृत नाट्यसाहित्य/कृति – विक्रमोवर्षीयम् – कालिदास****Time: 2 Hours]****[Total Marks: 50****सूचना : / Instructions**

(१)

नीचे दशविवेक निशानीवाणी विगतो उत्तरवली पर अवश्य लप्यवी.
Fill up strictly the details of signs on your answer book

Name of the Examination:

S.Y.B.A. (Sem. III)

Name of the Subject :

Sanskrit - Paper 5-A (Core Course) (Principal)

ललित साहित्य – संस्कृत नाट्यसाहित्य/
कृति – विक्रमोवर्षीयम् – कालिदास

Subject Code No.: 2301000103033011

Seat No.:

Student's Signature

प्र. १ टूंकमां जवाब आपो. (कोई पण पांच)**१०**

१. नाटकमां प्रस्तावनानुं महत्व समजावो.
२. कालिदासनी कृतिओनां नाम जणावो.
३. आयु कोनो पुत्र छे? तेनी बाल्यावस्था क्यां वीते छे?
४. ईन्द्र शा माटे चित्ररथने पृथ्वी पर भोकले छे?
५. भरतमुनिना डेटवा शिष्यो छे? तेनां नाम जणावो.
६. सूर्य अने चंद्र पुरुरवाना शुं सगा छे?
७. उर्वशीओ कुमारने डेम रयवन ऋषिना आश्रममां मूक्यो एतो?

प्र. २ (अ) नीयेनामांथी गमे ते बे नो अनुवाद करो.**८**

१. आविर्भूते शशिनि तमसा मुच्यमानेव रात्रि -
नैशस्याचिर्हुतभुज इव च्छिन्नमूयिष्ठधूमा।
मोहेनान्तर्वरतनुरियं लक्ष्यते मुक्तकल्पा
गङ्गा रोधःपतनक्लुषा गृह्यतीव प्रसादम्॥

RAN-2301000103033011]

[1]

[P.T.O.]

P1159

२. यदृच्छया त्वं सकृदप्यवन्ध्ययोः
पथि स्थिता सुन्दरि यस्य नेत्रयोः।
त्वया विना सोऽपि समुत्सुको भवे
त्सखीजनस्ते किमुतार्द्रसौहृदः॥
३. हृदयमिषुभिः कामस्यान्तः सशल्यमिदं सदा
कथमुपलभे निद्रां स्वप्ने समागमकारिणीम्।
न च सुवदनामालेख्येऽपि प्रियामसमाप्य तां।
मम नयनयोरुद्वाष्पत्वं सखे न भविष्यति॥
४. वासार्थं हर संभृतं सुरभिणा पौष्पं रजो वीरुधां
किं मिथ्या भवतो हृतेन दयितास्त्रेहस्वहस्तेन मे।
जानीते हि मनोविनोदनफलैरेवंविधैर्धारितं
कामार्तं जनमज्जनां एतिभवानालक्षितप्रार्थनः॥

(ब) नीचेनामांथी गमे ते अेक पूर्वापर संदुर्भ आपी समज्जवो.

०५

१. अथवा चन्द्रादमृतमिति किमत्राश्चर्यम्।
२. नास्त्यगतिर्मनोरथानाम्।

प्र. ३ विक्रभोर्वशीयमनुं उद्गम स्थान दृशावी कालिदासे तेभां करेवा क्रेरुकार विशे जणुावो.

१३

अथवा

प्र. ३ उर्वशीनुं पात्रालेभन करो.

प्र. ४ गमे ते बे विशे विवेयनात्मक नोध लभो

१४

१. कालिदासनी प्रणय भावना
२. भूर्जपत्र प्रसंगनुं महत्व
३. त्रीज्ज अंकनो विष्कंभक
४. उपमा कालिदासस्य